International Journal of Social Nexus Review

Volume 1 | Issue 1 | July 2026

Available online at: https://socialnexusreview.com/

मुसहर समुदाय की वैश्विक अकादमिक विमर्श तक पहुँच: एक ग्रंथमितीय विश्लेषण एवं वैज्ञानिक मानचित्रीयकरण

डॉ. सुमन पाल

पी-एच.डी., शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

Email: suman.mgahv777@gmail.com

Received: 15 June 2026 | **Accepted:** 15 July 2026 | **Published:** 25 July 2026

सार (Abstract)

मुसहर समुदाय सामाजिक-शैक्षिक रूप से मुख्य समाज से कटा हुआ एक सजातीय बंद समूह के रूप में जीवन व्यतीत करता है। उनकी एक सुव्यवस्थित एवं सुनिश्चित जीवन जीने की परिपाटी अर्थात एक अद्वितीय जीवन दर्शन और संस्कृति है। ये अपनी अद्वितीय संस्कृति, ज्ञान प्रणाली और विशिष्ट जीवन दर्शन के आधार पर वैश्विक अनुसंधानकर्त्ताओं को बहुत आकर्षित करते हैं। वैश्विक अकादमिक दुनिया में मुसहर समुदाय पर बहुत अधिक शोध अध्ययन हुआ है। इन शोध अध्ययनों की वैश्विक पहुँच कहाँ तक है, मुसहर समुदाय संबंधित अनुसंधान का ट्रेंड कैसा है, किस देश में सर्वाधिक अनुसंधान किए जा रहे हैं, कौन-कौन से संस्थान सर्वाधिक अनुसंधानिक उत्पादन कर रहे हैं, मुसहर समुदाय संबंधित सर्वाधिक अनुसंधानकर्त्ता कौन हैं और सर्वाधिक उत्पादक स्रोत कौन हैं; इत्यादि सवालों की पड़ताल करना ही इस अध्ययन का मुख्य सरोकार है। इसके लिए ‘डायमेंशन डेटाबेस’ की सहायता से संकलित 654 प्रकाशनों का वीओएस व्युवर सॉफ्टवेयर की सहायता से मात्रात्मक विश्लेषण करते हुए वैज्ञानिक दृश्यीकरण किया गया है। शोध परिणाम से स्पष्ट है कि मुसहर समुदाय संबंधित अनुसंधान कुल 41 देशों के विभिन्न संस्थानों में किए गए हैं। सर्वाधिक उत्पादक देश भारत, नेपाल और संयुक्त राज्य अमेरिका हैं। सर्वाधिक उत्पादक संस्थान त्रिभुवन विश्वविद्यालय, जेएनयू और दिल्ली विश्वविद्यालय हैं। सर्वाधिक उत्पादक अनुसंधानकर्त्ता इंद्रजीत राय एवं मिरियम शर्मा हैं।

मुख्य शब्द: मुसहर समुदाय, वैश्विक पहुँच, वीओएस व्युवर, वैज्ञानिक मानचित्रण, नेटवर्क दृश्यीकरण एवं सघनता दृश्यांकन।

प्रस्तावना:

भारतीय संविधान के अनुच्छेद-341 में अनुसूचित समुदाय के अंतर्गत सम्मिलित समस्त समुदाययों की कुल संख्या 1284 है। उन्हीं 1284 अनुसूचित समुदाययों के समूह को महात्मा गांधी जी ने ‘हरिजन’ नाम दिया था। भारतीय वर्ण व्यवस्था में अनुसूचित समुदाययों को शूद्र एवं अति शूद्र भी कहा गया है। अनुसूचित समुदाययों के लिए एक बहुत ही प्रचलित शब्दावली है- दलित। दलित शब्द का प्रयोग भारतीय समाज में दबे-कुचले, वंचित और हाशिए पर रहने वाली समुदाययों के लिए किया जाता है। दरअसल दलित समुदाययाँ सामाजिक संरचना, कर्म आधारित वर्ण-व्यवस्था का समुदाय आधारित हो जाना और पिछड़ी शैक्षिक-आर्थिक स्थिति इत्यादि कारणों से भेदभाव की शिकार रही हैं और उन्हें पूर्व में अछूत कहा जाता था। वर्तमान समय में भी अनुसूचित समुदाययों की स्थिति में बहुत सुधार नहीं हो पाया है। उन्हीं 1284 अनुसूचित समुदाययों में से एक अत्यधिक दबी-कुचली और मुख्य समाज से कटा हुआ समुदाय है- मुसहर। मुसहर समुदाय अपनी विशिष्ट सामाजिक संरचना के आधार पर एक ऐसे समूह का निर्माण करती है, जो मुख्यधारा के समाज से कटा हुआ हाशिये पर है। वैश्विक स्तर पर मुसहर समुदाय मुख्यतः भारत और नेपाल में रहते हैं। यदि भारत

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.

© The Author(s) 2026. IJSNR Published by **Shri Ram Niyamat Charitable Trust**.

के संदर्भ में देखा जाय तो मुसहर समुदाय का निवास अधिकांशतः उत्तर-पूर्वी भारत के तटीय और तराई इलाकों में है। 'मुसहरों को सदा, मांझी, मंडल, भुईया, रिक्यासन, ऋषिदेव, बलाकुमुनी, दैयतानिया, कसमेटा, वनमानुष जैसे विभिन्न नामों से भी संबोधित किया जाता है' (कुमार, 2017)। मुसहर समाज की अपनी खानपान, रहन-सहन की स्थिति और उनकी लोक परंपराएं भी उन्हें विशिष्ट बनाती हैं। मुसहरों की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्थिति अन्य अनुसूचित समुदायों की तुलना में आज भी बहुत निम्नतर है। बिना शिक्षा का स्तर ऊंचा किए मुसहरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ऊंचा कर पाना और उनकी सामाजिक समावेशिता को स्थापित कर पाना संभव नहीं है। शिक्षा को एक सामाजिक सुधार और आर्थिक विकास के एक उपकरण के रूप में स्वीकार करते हुए मुसहरों के लिए शिक्षा व्यवस्था हेतु अतिरिक्त प्रयास किया जाना चाहिए। 'शिक्षा तकनीकी विकास लाने के साथ-साथ संपूर्ण दुनिया से जुड़ने का अवसर प्रदान करती है, इसके अलावा शिक्षा को स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और समान अवसरों तथा सामाजिक मूल्यों पर आधारित एक बेहतर सामाजिक परिवर्तन के लिए भी महत्वपूर्ण माना जाता है' (राधा कृष्ण और कुमारी 1989)। वास्तव में 'शिक्षा व्यक्ति को न केवल दक्षता स्तर बढ़ाने की दिशा में कौशल विकसित करने में सक्षम बनाती है बल्कि उसके व्यक्तित्व को सकारात्मक रूप से बदलने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विशेष रूप से व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा महत्वपूर्ण रूप से मदद करती है' (पासवान और जयदेव 2002)। भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था होने के बावजूद मुसहरों की राजनीतिक सहभागिता केवल और केवल वोट देने तक सीमित है। वे मुख्य समाज से आज भी कटे हुए हैं। सामाजिक विकास और सामाजिक समावेश के लिए भी शैक्षणिक संस्थान सबसे महत्वपूर्ण माने जाते हैं। शैक्षणिक संस्थान तक मुसहरों की पहुंच अभी भी ठीक ढंग से सुनिश्चित नहीं हो पाई है। क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। उनके पास खेती के लिए अपनी जमीन नहीं है। थोड़ा बहुत पट्टे वाली जमीन है भी तो केवल छप्पर बनाकर रहने भर की। मुसहर समुदाय दैनिक मजदूरी करके अपने पेट भरने का काम करती है। उनके नियमित रोजगार की कोई समुचित व्यवस्था नहीं है।

शोध का औचित्य:

मुसहर समुदाय के वैश्विक अकादमिक विमर्श तक पहुँच का ग्रंथमितीय विश्लेषणात्मक अध्ययन सुनिश्चित करने से पहले शोधार्थी द्वारा मुसहर समुदाय और ग्रंथमितीय विश्लेषण संबंधित प्रकाशित अध्ययनों की समीक्षा की गई। मुसहर समुदाय और ग्रंथमितीय विश्लेषण संबंधी अध्ययनों समीक्षा से यह प्राप्त हुआ कि मुसहर समुदाय संबंधित अधिकांशतः उनकी शैक्षिक स्थिति, संस्कृति एवं विकास (कुमार, 2006; अमृता, 2021; प्रसाद, 2007; राणा, 2017; कुमार, 2018; शर्मा, 2022 और कुमार, 2020), मुसहर समुदाय के स्वास्थ्य, प्रजनन, बचपन एवं बीमारी (खडका, एट. आल., 2020; सुबेदी एवं गौतम, 2021; रघुवंशी, 2018; सुब्बा, राणा एवं अंसारी, 2007; सिंह, 2019) और मुसहर समुदाय की सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन, राजनीति एवं सीमांतता (मुकुल, 1999; पौडेल एंड कट्टेल, 2019; झा, 2021; कार्की, 2007; देव, 2013; थॉमस एंड आरा, 2018; शर्मा एंड नायक, 2018; सिंह, 2021; कुमारी, 2020) संबंधित अध्ययन हुआ है। इसी प्रकार सपोटा, शर्मा एंड जोशी (2016); चन्द एंड बनर्जी (2019); गुप्ता (2021); सहाय (2019); जायसवाल (2023) और शर्मा एंड नायक (2018) ने मुसहर समुदाय का जाति एवं लैंगिक भेदभाव तथा सामाजिक समावेशन विषय पर अध्ययन किया है। लेकिन एक भी अध्ययन मुसहर समुदाय के वैश्विक अकादमिक विमर्श तक पहुँच के संदर्भ में नहीं प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार शोधार्थी द्वारा ग्रंथमितीय विश्लेषणात्मक अध्ययनों की भी समीक्षा की गई। ग्रंथमितीय अध्ययन अनुसंधान के क्षेत्र में तेजी से उभरता हुआ ज्ञानानुशासन है। ग्रंथमितीय अनुसंधान कई वर्षों से विकसित हुआ है और इसने कई वैज्ञानिक उपलब्धियां हासिल की हैं (ल्यू एट अल., 2023)। विभिन्न ज्ञानानुशासनों के क्षेत्र में किए गए कुछ ग्रंथमितीय अध्ययन इस प्रकार हैं-साहित्य के क्षेत्र में (जेमिनियानी एट अल., 2014; ल्यू एट अल., 2023; पत्रा एट अल., 2006), पौधों की खेती के संबंध में (हबौबी एट. अल., 2024), ग्रंथ सूची के क्षेत्र में (कीर्तानिया, 2023; ब्रॉडस, 1987; जिया एट अल., 2024), इस्लामी शिक्षा का आधुनिकीकरण (असारी एट अल., 2024), ग्रीन अकाउंटिंग (रिज़्का एट अल., 2024), पर्यटन के क्षेत्र में (कोसोग्लू एट अल., 2016), समाज विज्ञान के क्षेत्र में (गोगोई एट अल., 2023) शिक्षा के क्षेत्र में (असारी एट

अल., 2024; ओ'कॉनर, 2024; एस एट अल., 2023) हैं। कुछ अन्य ग्रंथ सूची संबंधी अध्ययन रुझान विश्लेषण और वैज्ञानिक मानचित्रण (हेरुत, 2024; मेरिगो और यांग, 2017; थॉम्पसन और वाकर, 2015; वी. आर. एट अल., 2024; वैश्य एट अल., 2024; वांग एट अल., 2021) के क्षेत्र में भी किए गए हैं। उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि मुसहर समुदाय के वैश्विक अकादमिक पहुँच के संदर्भ में एक भी ग्रंथमितीय विश्लेषणात्मक अध्ययन नहीं किया गया है। अतः शोधार्थी को यह समझने की आवश्यकता हुई कि मुसहर समुदाय संबंधित अध्ययन वैश्विक अकादमिक दुनिया के किन-किन देशों में किए गए हैं, मुसहर समुदाय संबंधी अनुसंधान के क्षेत्र में सर्वाधिक उत्पादक देश, संस्थान, अनुसंधानकर्त्ता और स्रोत कौन-कौन से हैं। उक्त सवालों का विस्तृत पड़ताल करने के लिए शोधार्थी द्वारा इस शोध पत्र में मुसहर समुदाय संबंधित प्रकाशनों का ग्रंथमितीय विश्लेषण एवं वैज्ञानिक मानचित्रण प्रस्तुत किया गया है।

शोध उद्देश्य:

इस शोध अध्ययन का मुख्य सरोकार मुसहर समुदाय के विभिन्न आयामों के संदर्भ में किए जा चुके अध्ययनों का ग्रंथमितीय विश्लेषण और दृश्यीकरण करना था। इसके साथ ही मुसहर समुदाय संबंधित अध्ययनों के अकादमिक विकास एवं अनुसंधान प्रवृत्ति और शीर्ष उत्पादक अनुसंधानकर्त्ता, स्रोत तथा संस्थान का पता लगाना भी इस शोध अध्ययन का विशिष्ट उद्देश्य था।

शोध योजना एवं क्रियाविधि:

इस शोध अध्ययन को पूर्ण करने के लिए इसकी मात्रात्मक प्रकृति को ध्यान में रखते हुए मात्रात्मक शोध उपागम का प्रयोग किया गया। इस शोध अध्ययन को ग्रंथमितीय विश्लेषण विधि से पूर्ण किया गया है। इस अध्ययन को पूर्ण करने के लिए सर्वप्रथम प्रदत्त संकलन के लिए 'डायमेंशन डेटाबेस' (https://www.dimensions.ai/) से "मुसहर समुदाय" सर्च करके वर्ष 2024 (18/09/2024, 21:45 PM) तक प्रकाशित कुल 654 प्रकाशनों को सीएसवी फ़ाइल के रूप में एक्सपोर्ट किया गया। उसके बाद संकलित प्रकाशनों का वीओएस व्युवर (1.6.20 संस्करण) सॉफ्टवेयर के विभिन्न विकल्पों की सहायता से विश्लेषण करके आवश्यक आउटपुट का स्क्रीनशॉट संकलित किया गया है। बेहतर समझ हेतु उक्त स्क्रीन शॉट्स को आवश्यकतानुसार परिणाम के अंतर्गत आगे समुचित स्थान पर प्रस्तुत किया गया है।

परिणाम:

मुसहर समुदाय संबंधी प्रकाशन एवं देश:

मुसहर समुदाय संबंधित अकादमिक अध्ययन बहुत पहले से प्रारम्भ है। शोधार्थी द्वारा अध्ययन की सुविधा और सारगर्भित निहितार्थ प्रस्तुत करने के लिए वर्ष 1950 के बाद प्रकाशित प्रकाशनों को ही सम्मिलित किया गया है। इस अध्ययन के परिणाम वर्ष 1951- 2024 (18/09/2024, 21:45 PM) तक 'डायमेंशंस डेटाबेस' पर उपलब्ध प्रकाशनों पर आधारित हैं। इस अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि मुसहर समुदाय के संदर्भ में सर्वाधिक संबंधित कुल 654 प्रकाशन अभी तक डायमेंशंस डेटाबेस पर उपलब्ध हैं। प्रस्तुतीकरण की सुविधा तथा बेहतर अर्थ ग्रहण हेतु कुल 654 प्रकाशनों को वर्ष 1951 से लेकर 2000 तक 10 वर्ष वर्ग अंतराल, 2000 से 2015 तक 5 वर्ष वर्ग अंतराल और 2015 से 2024 तक वार्षिक रूप से चित्र-1 में प्रस्तुत किया गया है-

चित्र-1: मुसहर समुदाय संबंधित कुल वैश्विक प्रकाशन (1951-2024)

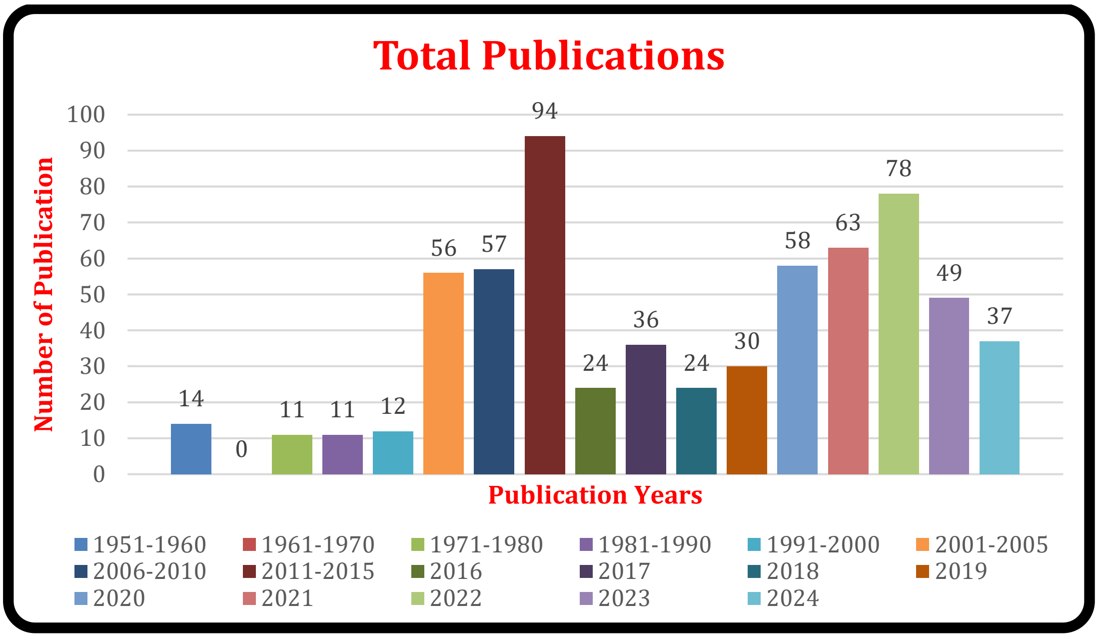

स्रोत: शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित

उपरोक्त चित्र-1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि वर्ष 1951-1960 के दौरान मुसहर समुदाय संबंधी कुल 14 प्रकाशन हुए हैं। इसी प्रकार 196101970 के मध्य 0, 1971-1980 और 1981-1990 के मध्य 11-11, 1991-2000 के मध्य 12, 2001-2005 के मध्य 56, 2006-2010 के मध्य 57 और 2011-2015 के मध्य कुल 94 प्रकाशन हुए हैं। इसी प्रकार 2016 से 2024 तक वार्षिक रूप से क्रमशः 24, 36, 24, 30, 58, 63, 78, 49 और 37 प्रकाशन हुए हैं। वार्षिक आधार पर सर्वाधिक प्रकाशन (78) वर्ष 2022 में हुआ है। इससे स्पष्ट है कि मुसहर समुदाय वैश्विक अकादमिक प्रकाशन की दुनिया में अब भी ट्रेंड में है। मुसहर समुदाय संबंधित प्रकाशनों के कालखंड आधारित विश्लेषण के बाद भौगोलिक (देश) आधार पर विश्लेषण अग्रलिखित है।

मुसहर समुदाय संबंधी प्रकाशन करने वाले देश:

मुसहर समुदाय संबंधी प्रकाशन करने वाले देशों का विश्लेषण करने पर प्राप्त हुआ कि कुल 654 प्रकाशन कुल 41 देशों के अनुसंधानकर्ताओं द्वारा कराया गया है। उक्त 41 देशों में से 37 देश आपस में संबंधित होकर 10 क्लस्टर, 79 लिंक्स का निर्माण करते हैं। इन 37 देशों का कुल लिंक स्ट्रेंथ 113 प्राप्त हुआ है। आपस में सर्वाधिक लिंक्ड 37 देशों का नेटवर्क दृश्यीकरण मानचित्र और सघनता दृश्यीकरण मानचित्र क्रमशः चित्र-2 (पृष्ठ-6) एवं चित्र-3 (पृष्ठ-7) में देखा जा सकता है।

चित्र-2: मुसहर समुदाय संबंधी प्रकाशन करने वाले देशों का नेटवर्क दृश्यीकरण मानचित्र

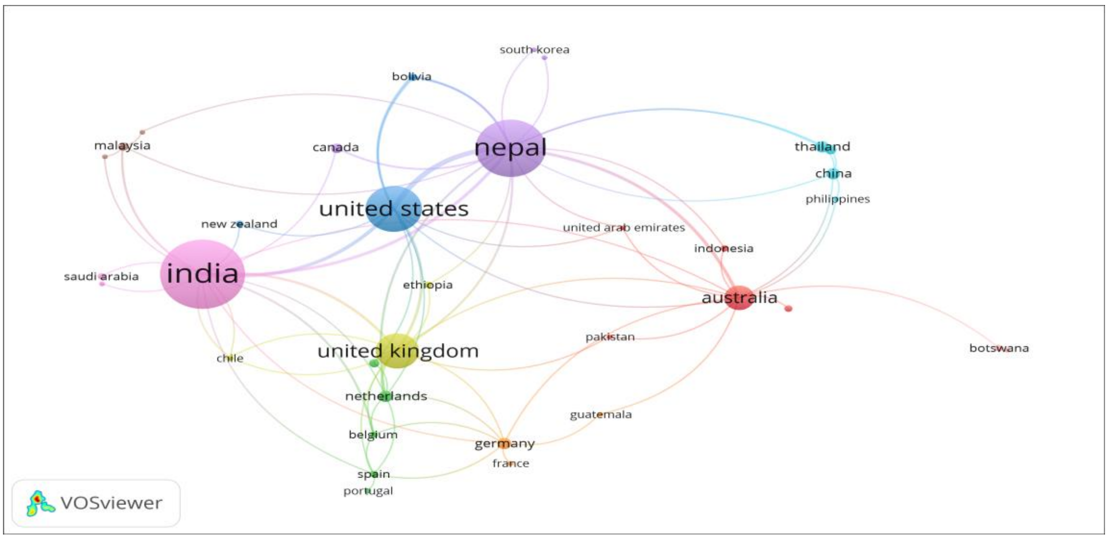

स्रोत: वोस व्युवर सॉफ्टवेयर द्वारा प्रकाशन करवाने वाले देशों का नेटवर्क दृश्यीकरण मानचित्र आउटपुट का स्क्रीनशॉट

चित्र-3: मुसहर समुदाय संबंधी प्रकाशन करने वाले देशों का सघनता दृश्यीकरण मानचित्र

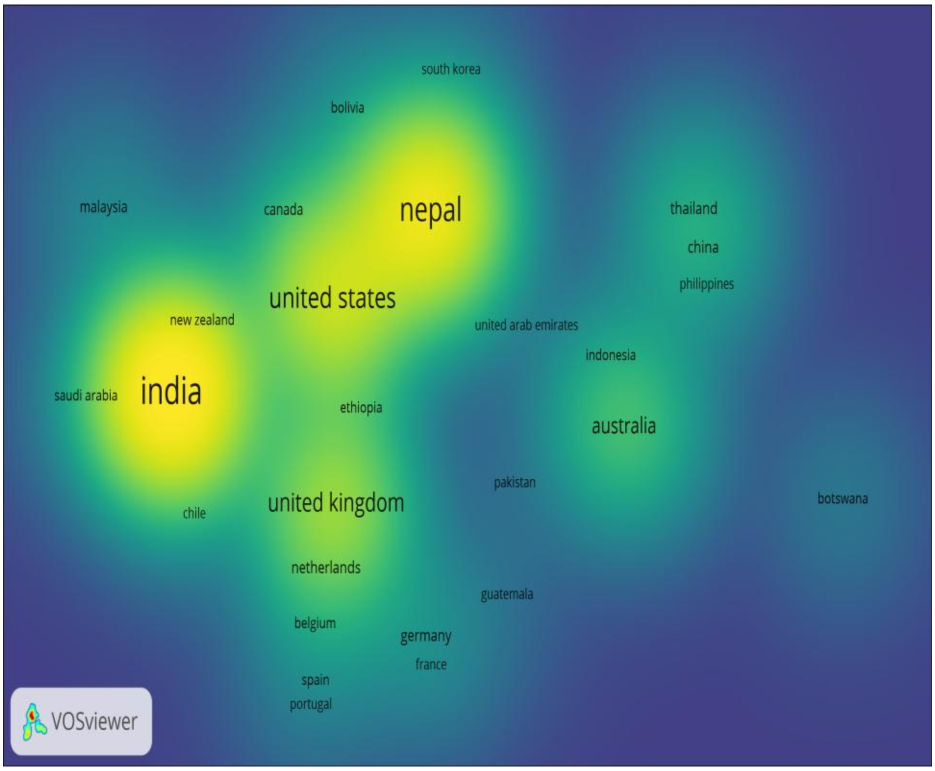

स्रोत: वोस व्युवर सॉफ्टवेयर द्वारा प्रकाशन करवाने वाले देशों का सघनता दृश्यीकरण मानचित्र आउटपुट का स्क्रीनशॉट

उपर्युक्त चित्र-2 एवं चित्र-3 में क्रमशः कुल देशों का नेटवर्क और सघनता मानचित्रण प्रस्तुत किया गया है। चित्र-2 के नेटवर्क मानचित्र से स्पष्ट है कि मुसहर समुदाय संबंधित अनुसंधान उत्पादन करने वाले और आपस में लिंक्ड 37 देश 10 क्लस्टर का निर्माण करते हैं। उनके लिंक्स और स्ट्रेंथ के आधार पर सघनता मानचित्र (चित्र-3) के अवलोकन से स्पष्ट है कि सर्वाधिक उत्पादक क्लस्टर्स की संख्या 4 है, जिनको सबसे अधिक चटक रंग के रूप में देखा जा सकता है। भारत, नेपाल, अमेरिका और यूके सर्वाधिक अनुसंधान उत्पादक देश हैं। चित्र-2 के अनुसार कुल 41 देशों में से सर्वाधिक अनुसंधान उत्पादन करने वाले 10 देश आपस में जुड़कर कुल 4 क्लस्टर में 24 लिंक्स का निर्माण करते हैं। इनका कुल लिंक स्ट्रेंथ 51 है। शीर्ष 10 उत्पादक देशों का उनके प्रकाशनों एवं साइटेशंस की संख्या तथा कुल लिंक स्ट्रेंथ सहित विवरण नीचे तालिका-1 में प्रस्तुत है-

तालिका-1: शीर्ष 10 मुसहर समुदाय संबंधित अनुसंधान उत्पादक देश

क्रम सं.	देश	प्रकाशन	साइटेशंस	कुल लिंक स्ट्रेंथ
1.	भारत	99	750	16
2.	नेपाल	73	6	26
3.	संयुक्त राज्य अमेरिका	50	19	19
4.	युनाइटेड किंगडम	32	28	12
5.	ऑस्ट्रेलिया	18	211	9
6.	चीन	5	15	3
7.	जर्मनी	5	116	4
8.	नीदरलैंड	5	20	7
9.	थाईलैंड	5	401	3
10.	कनाडा	4	7	3

स्रोत: शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित

उपर्युक्त तालिका-1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि मुसहर समुदाय संबंधी सर्वाधिक अनुसंधान उत्पादन करने वाले 10 देश क्रमशः भारत (99), नेपाल (73), संयुक्त राज्य अमेरिका (50), युनाइटेड किंगडम (32), ऑस्ट्रेलिया (18), चीन (5), जर्मनी (5), नीदरलैंड (5), थाईलैंड (5) और कनाडा (4) हैं। इनमें से सबसे अधिक (99) प्रकाशन करने वाला देश भारत है। भारतीय प्रकाशनों को सर्वाधिक (750) साइटेशंस भी प्राप्त हुए हैं। भारत का कुल लिंक स्ट्रेंथ 16 है। शीर्ष 10 देशों में सबसे कम (4) प्रकाशन करने वाला देश कनाडा है। कनाडा को 7 साइटेशंस प्राप्त हुए हैं और उसका कुल लिंक स्ट्रेंथ 3 है। शीर्ष 10 उत्पादक देशों का नेटवर्क दृश्यीकरण चित्र-4 में प्रस्तु किया गया है-

चित्र-4: शीर्ष 10 देशों का नेटवर्क दृश्यीकरण मानचित्र

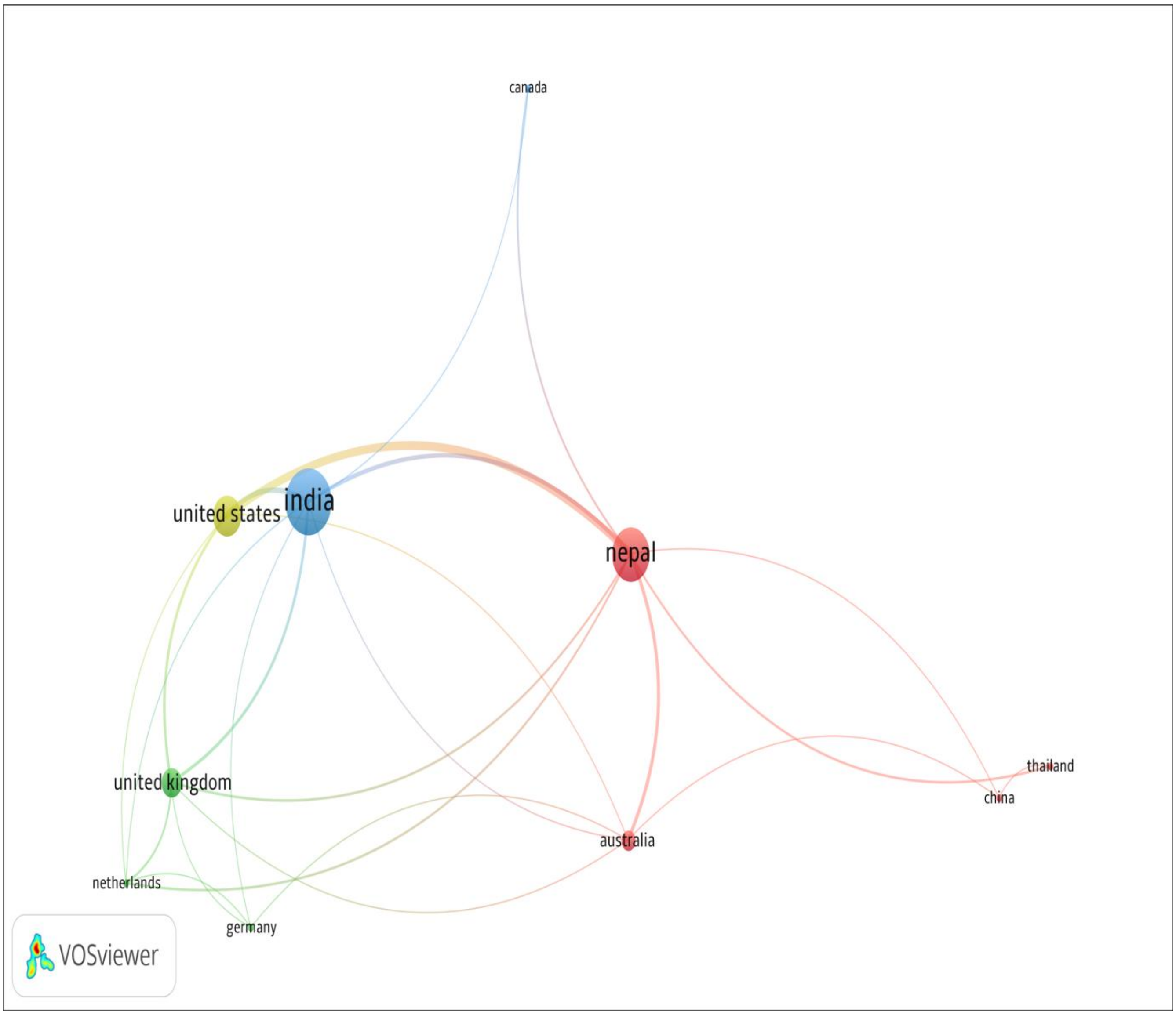

स्रोत: वोस व्युवर सॉफ्टवेयर द्वारा शीर्ष 10 देशों का नेटवर्क दृश्यीकरण मानचित्र आउटपुट का स्क्रीनशॉट

उपर्युक्त चित्र-4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि मुसहर समुदाय संबंधी प्रकाशन करने वाले शीर्ष 10 देश कुल चार क्लस्टर का निर्माण करते हैं। क्लस्टर-1 लाल रंग, क्लस्टर-2 हरा, क्लस्टर-3 नीला और क्लस्टर-4 पीला रंग से प्रदर्शित है। ऑस्ट्रेलिया, चीन, थाईलैंड और नेपाल क्लस्टर-1 में सम्मिलित हैं; क्लस्टर-2 में यूनाइटेड किंगडम, नीदरलैंड और जर्मनी; क्लस्टर-3 में भारत और कनाडा तथा क्लस्टर-4 में केवल संयुक्त राज्य अमेरिका है। मुसहर समुदाय संबंधी अनुसंधानों का प्रकाशन करने वाले शीर्ष 10 उत्पादक देशों का मानचित्र चित्र-5 (पृष्ठ-9) में देखा जा सकता है।

चित्र-5: शीर्ष 10 उत्पादक देशों का मानचित्र

स्रोत: एम. एस. एक्सेल-21 सॉफ्टवेयर द्वारा शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित

मुसहर समुदाय संबंधी प्रकाशन एवं अनुसंधानकर्त्ता:

मुसहर समुदाय संबंधी प्रकाशन करवाने वाले कुल 41 देशों के कुल 922 अनुसंधानकर्त्ता हैं। ये 922 अनुसंधानकर्त्ता आपस में जुड़कर 424 क्लस्टर का निर्माण करते हैं। उक्त 922 अनुसंधानकर्त्ताओं के मध्य 1709 लिंक्स का निर्माण करते हैं। इनका कुल लिंक स्ट्रेंथ 1760 है। 922 अनुसंधानकर्त्ताओं का सघनता दृश्यीकरण मानचित्र चित्र-6 (पृष्ठ-11) में देखा जा सकता है।

चित्र-6: सभी अनुसंधानकर्त्ताओं का सघनता दृश्यीकरण मानचित्र

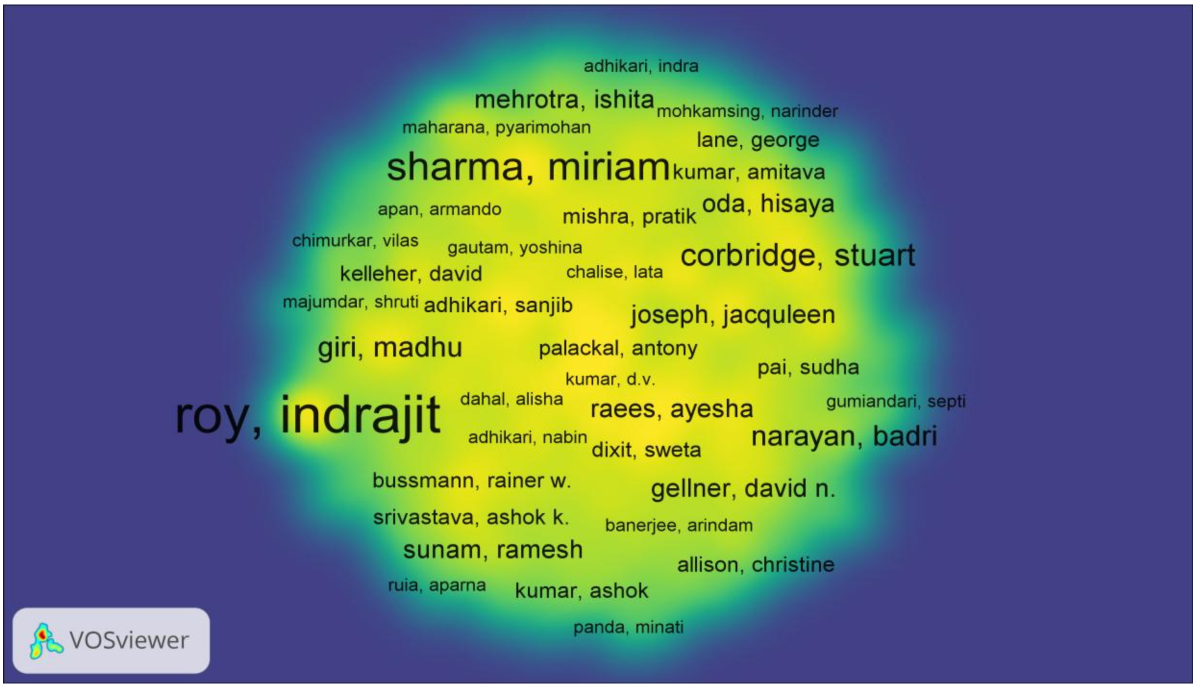

स्रोत: वोस व्युवर सॉफ्टवेयर द्वारा सभी अनुसंधानकर्त्ताओं का सघनता दृश्यीकरण मानचित्र आउटपुट का स्क्रीनशॉट

शीर्ष 10 उत्पादक अनुसंधानकर्त्ता:

मुसहर समुदाय संबंधित अनुसंधान कार्य प्रकाशित करवाने वाले कुल 922 अनुसंधानकर्त्ताओं को उनके प्रकाशनों की संख्या के घटते क्रम में तालिकबद्ध करके व्यवस्थित किया गया। कुल 922 अनुसंधानकर्त्ताओं की उक्त सूची में से शीर्ष 10 अनुसंधानकर्त्ताओं का प्रकाशनों एवं साइटेशंस की संख्या और कुल लिंक स्ट्रेंथ सहित विवरण तालिका-2 में प्रस्तुत है-

तालिका-2: शीर्ष 10 उत्पादक अनुसंधानकर्त्ताओं का विवरण

क्रम संख्या	अनुसंधानकर्त्ता	प्रकाशनों की सख्या	साइटेशंस की संख्या	कुल लिंक स्ट्रेंथ
1.	राय, इंद्रजीत	13	12	0
2.	शर्मा, मरियम	8	136	0
3.	कॉर्ब्रिज, स्टुअर्ट	5	102	0
4.	चंद्र, उदय	4	84	0
5.	नारायण, बद्री	4	34	0
6.	विल्सो, जेफरी	4	48	0
7.	जोसेफ, जैकलीन	3	14	0
8.	कुनाथ, जॉर्ज जे.	3	59	0
9.	ओडा, हिसाया	3	36	2
10.	सुजिता, युको	3	36	2

स्रोत: शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित

उपर्युक्त तालिका-2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि सर्वाधिक उत्पादक लेखक इंद्रजीत राय हैं। राय के मुसहर समुदाय संबंधी अनुसंधान प्रकाशनों की कुल संख्या 13 और साइटेशंस की संख्या 12 है। राय का कुल लिंक स्ट्रेंथ 0 है। इससे पता चलता है कि मुसहर समुदाय संबंधी अनुसंधान के क्षेत्र में राय का वैश्विक अकादमिक कनेक्शन शून्य है। सर्वाधिक उत्पादक लेखकों में दूसरे स्थान पर मरियम शर्मा हैं। शर्मा के प्रशनों की संख्या 8, साइटेशंस की सख्या 136 और कुल लिंक स्ट्रेंथ 0 है। इसी प्रकार स्टुअर्ट कॉर्ब्रिज (5), उदय चंद्र (4), बद्री नारायण (4), जेफरी विल्सो (4), जैकलीन जोसेफ (3), जॉर्ज जे. कुनाथ (3) और हिसाया ओड़ा(3) क्रमशः तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्टम, सप्तम, अष्टम, नवम और दसवें स्थान पर हैं। बेहतर दृश्यीकृत समझ के लिए वोस व्युवर सॉफ्टवेयर की सहायता से सघनता दृश्यीकरण मानचित्र बनाया गया। शीर्ष 10 अनुसंधानकर्त्ताओं का सघनता दृश्यीकरण मानचित्र चित्र-7 में देखा जा सकता है।

चित्र-7: शीर्ष 10 अनुसंधानकर्त्ताओं **का सघनता दृश्यीकरण मानचित्र**

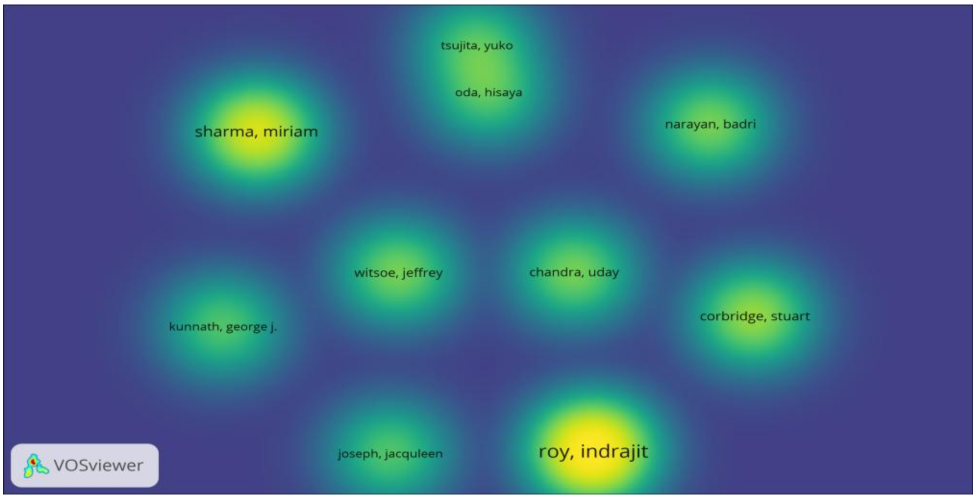

स्रोत: वोस व्युवर सॉफ्टवेयर द्वारा शीर्ष 10 अनुसंधानकर्त्ताओं का सघनता दृश्यीकरण मानचित्र आउटपुट का स्क्रीनशॉट

मुसहर समुदाय संबंधी प्रकाशन और वैश्विक अकादमिक संस्थान:

वीओएस व्युवर सॉफ्टवेयर की सहायता से मुसहर समुदाय संबंधी प्रकाशनों के अनुसंधानकर्त्ताओं से संबंधित संस्थानों का विश्लेषण करने पर प्राप्त हुआ कि कुल 922 अनुसंधानकर्त्ता वैश्विक स्तर पर कुल 435 संस्थानों से सम्बद्ध हैं। अर्थात मुसहर समुदाय संबंधी प्रकाशित कुल 654 प्रकाशन उक्त 435 संस्थानों का अनुसंधान उत्पाद हैं। ये 435 संस्थान 181 क्लस्टर्स का निर्माण करते हैं। आपस में जुड़कर कुल 838 अकादमिक लिंक्स का भी निर्माण करते हैं। इनका कुल लिंक स्ट्रेंथ 884 है। उक्त 435 देशों में से मजबूत जुड़ाव का वाले संस्थानों का सघनता दृश्यीकरण मानचित्र चित्र-8 में प्रस्तुत है-

चित्र-8: मुसहर समुदाय संबंधी अनुसंधान उत्पादक वैश्विक संस्थानों का सघनता दृश्यीकरण मानचित्र

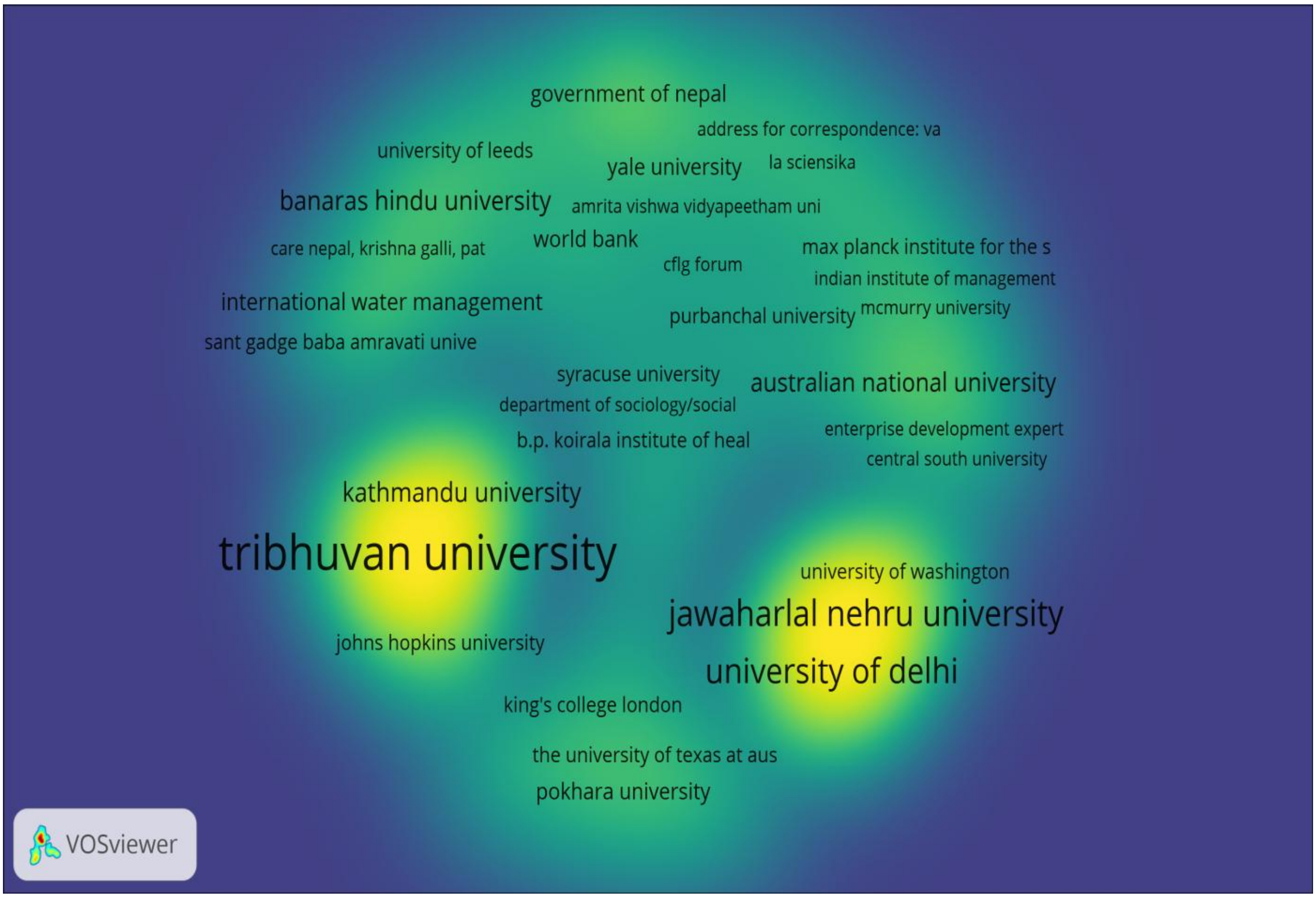

स्रोत: वोसव्युवर सॉफ्टवेयर द्वारा मुसहर समुदाय संबंधी अनुसंधान उत्पादक वैश्विक संस्थानों का सघनता दृश्यीकरण मानचित्र आउटपुट का स्क्रीनशॉट

उपर्युक्त चित्र-8 के अवलोकन से स्पष्ट है कि सघनता मानचित्र के दो जगहों पर प्रदर्शित संस्थान अधिक चटक रंग के साथ बड़े फॉन्ट साइज में दिखाई पड़ रहे हैं। दरअसल ये संस्थान सर्वाधिक अनुसंधान उत्पादक और अधिक मजबूत अकादमिक लिंक्स को प्रदर्शित कर रहे हैं। यही वोसव्युवर सॉफ्टवेयर की ख़ासियत है। सर्वाधिक उत्पादक शीर्ष 10 संस्थानों का विवरण तालिका-3 (पृष्ठ-13) में देखा जा सकता है।

मुसहर समुदाय संबंधी शीर्ष 10 उत्पादक संस्थान:

कुल 435 संस्थानों का विश्लेषण कम से कम 5 प्रकाशन और 5 साइटेशन मानदंड के साथ करने पर 10 शीर्ष संस्थान प्राप्त हुए। अर्थात शीर्ष 10 संस्थान ऐसे हैं जिनके द्वारा मुसहर समुदाय संबंधी कम से कम 5 अनुसंधान प्रकाशन किया गया है और उन प्रकाशनों पर कम से कम 5 साइटेशन भी अवश्य प्राप्त हुआ है। ये 10 संस्थान आपस में 4 क्लस्टर, 8 लिंक्स और कुल 10 लिंक स्ट्रेंथ का निर्माण करते हैं। शीर्ष 10 अनुसंधान उत्पादक संस्थानों का विवरण तालिका-3 में प्रस्तुत किया गया है-

तालिका-3: शीर्ष 10 मुसहर समुदाय संबंधी अनुसंधान उत्पादक संस्थान

क्रम सं.	संस्थान	प्रकाशनों की संख्या	साइटेशंस की संख्या	कुल लिंक स्ट्रेंथ
1.	त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल	45	185	3
2.	जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, भारत	17	64	3
3.	दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत	16	60	3
4.	टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, भारत	9	38	3
5.	यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड, इंग्लैंड	7	71	1
6.	बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, भारत	6	197	0
7.	काठमांडू विश्वविद्यालय, नेपाल	6	38	2
8.	कृषि और वानिकी विश्वविद्यालय, नेपाल	5	5	3
9.	एशियाई प्रौद्योगिकी संस्थान, थाईलैंड	5	25	2
10.	ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी, आस्ट्रेलिया	5	75	0

स्रोत: शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित

उपर्युक्त तालिका-3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि मुसहर समुदाय संबंधी शीर्ष 10 अनुसंधान उत्पादक देशों की सूची में प्रथम स्थान पर त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल है। त्रिभुवन विश्वविद्यालय ने मुसहर समुदाय संबंधित कुल 45 अनुसंधान प्रकाशन किया है। इस विश्वविद्यालय द्वारा मुसहर समुदाय संबंधी प्रकाशनों पर कुल 185 साइटेशंस प्राप्त हुए हैं। इस संस्थान का कुल लिंक स्ट्रेंथ 3 है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, भारत, जोकि द्वितीय स्थान पर है, ने 17 प्रकाशन किए हैं और उन प्रकाशनों पर 64 साइटेशंस प्राप्त हुए हैं।

इस विश्वविद्यालय का भी कुल लिंक स्ट्रेंथ 3 है। इसी प्रकार दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत (16); टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, भारत (9); यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड, इंग्लैंड (7); बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, भारत (6); काठमांडू विश्वविद्यालय, नेपाल (6); कृषि और वानिकी विश्वविद्यालय, नेपाल (5); एशियाई प्रौद्योगिकी संस्थान, थाईलैंड (5) और ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी, आस्ट्रेलिया (5) मुसहर समुदाय संबंधित अनुसंधान प्रकाशनों की संख्या के आधार पर क्रमशः तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्टम, सप्तम, अष्टम, नवम और दसवें स्थान पर हैं। उक्त शीर्ष 10 संस्थानों का क्लस्टर सघनता दृश्यीकरण मानचित्र चित्र-9 में देखा जा सकता है।

चित्र-9: शीर्ष 10 संस्थानों का क्लस्टर सघनता दृश्यीकरण मानचित्र

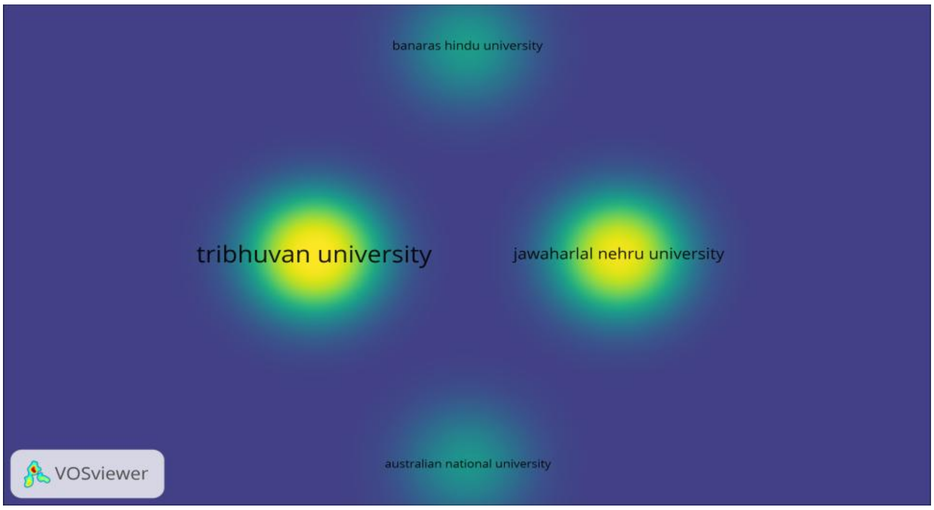

स्रोत: वोसव्युवर सॉफ्टवेयर द्वारा मुसहर समुदाय संबंधी शीर्ष 10 उत्पादक संस्थानों का क्लस्टर सघनता दृश्यीकरण मानचित्र आउटपुट का स्क्रीनशॉट

मुसहर समुदाय संबंधी अनुसंधान प्रकाशित करने वाले स्रोत:

वोसव्युवर सॉफ्टवेयर की सहायता से मुसहर समुदाय संबंधी प्रकाशित अनुसंधानों का विश्लेषण करने पर प्राप्त हुआ कि कुल 654 प्रकाशनों को प्रकाशित करने वाले स्रोतों की कुल संख्या 293 है। मुसहर समुदाय संबंधित प्रकाशन करने वाले ये 293 स्रोत आपस में जुड़कर 229 क्लस्टर्स और 84 लिंक्स का निर्माण करते हैं। इन सभी स्रोतों का कुल लिंक स्ट्रेंथ 94 है। उक्त स्रोतों का सघनता दृश्यीकरण मानचित्र चित्र-10 (पृष्ठ-16) में प्रस्तुत किया गया है।

चित्र-10: मुसहर समुदाय संबंधी अनुसंधान प्रकाशित करने वाले स्रोतों का सघनता दृश्यीकरण मानचित्र

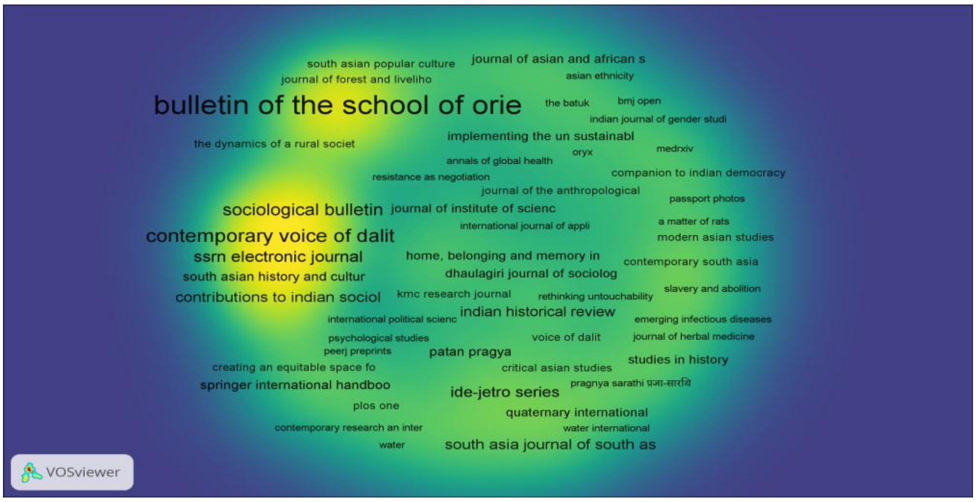

स्रोत: वोसव्युवर सॉफ्टवेयर द्वारा मुसहर समुदाय संबंधी अनुसंधान प्रकाशित करने वाले स्रोतों का सघनता दृश्यीकरण मानचित्र आउटपुट का स्क्रीनशॉट

उपरोक्त चित्र-10 के अवलोकन से स्पष्ट है कि बुलेटिन ऑफ द स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज़, कंटेम्पररी वाइस ऑफ दलित जैसे स्रोत अन्य स्रोतों की तुलना में अधिक स्पष्ट दिखाई पड़ रहे हैं और इनका रंग अधिक चटक तथा फॉन्ट साइज बड़ा है। इससे स्पष्ट है कि ये दोनों स्रोत सर्वाधिक उत्पादक स्रोत हैं। इसी तरह और भी स्रोत हैं, जो उक्त दोनों स्रोतों से कम लेकिन अन्यों की तुलना में अधिक उत्पादक हैं। अध्ययन की सुविधा हेतु शीर्ष 10 उत्पादक स्रोतों को तालिका-4 में प्रस्तुत किया गया है-

तालिका-4: शीर्ष 10 उत्पादक स्रोतों का विवरण

क्रम सं.	स्रोत	प्रकाशनों की संख्या	साइटेशंस की संख्या	कुल लिंक स्ट्रेंथ
1.	बुलेटिन ऑफ द स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज़	33	24	0
2.	कंटेम्पररी वाइस ऑफ दलित	13	21	1
3.	सोशियोलॉजिकल बुलेटिन	10	12	2
4.	द जर्नल ऑफ पिसेंड स्टडीज़	9	219	2
5.	एसएसआरएन इलेक्ट्रॉनिक जर्नल	8	20	1
6.	आईडी-जेट्रो सीरीज	7	23	0
7.	सोशल चेंज	7	8	1
8.	कंट्रिब्यूशन टु इंडियन सोशियोलॉजी	6	24	0
9.	जनरल ऑफ सोशल इन्क्लूजन स्टडीज़	6	6	1
10.	साउथ एशियन जर्नल ऑफ साउथ एशियन स्टडीज़	6	38	0

स्रोत: शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित

उपर्युक्त तालिका-4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि वैश्विक स्तर पर मुसहर समुदाय संबंधी सर्वाधिक अनुसंधान प्रकाशित करने वाला स्रोत 'बुलेटिन ऑफ द स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज़' है। कुल 293 स्रोतों में यह प्रथम स्थान पर है। इसने मुसहर समुदाय संबंधी कुल 33 अनुसंधान प्रकाशन किया है और उन 33 प्रकाशनों पर उसे कुल 24 साइटेशंस प्राप्त हुए हैं। इसी प्रकार घटते प्रकाशनों की संख्या के आधार पर अन्य स्रोत क्रमशः कंटेम्परर्री वाइस ऑफ दलित (13 प्रकाशन, 21 साइटेशन), सोशियोलॉजिकल बुलेटिन (10 प्र., 12 सा.), द जर्नल ऑफ पिसेंड स्टडीज़ (10 प्र., 12 सा.), एसएसआरएन इलेक्ट्रॉनिक जर्नल (8 प्र., 20 सा.), आईडी-जेट्रो सीरीज (7 प्र., 23 सा.), सोशल चेंज (7 प्र., 8 सा.), कंट्रिब्यूशन टु इंडियन सोशियोलॉजी (6 प्र., 24 सा.), जनरल ऑफ सोशल इन्क्लूजन स्टडीज़ (6 प्र., सा.) और साउथ एशियन जर्नल ऑफ साउथ एशियन स्टडीज़ (6 प्र., 38 सा.) हैं। मुसहर समुदाय संबंधी अध्ययन करने वाले अनुसंधानकर्त्ता उक्त पत्रिकाओं की सहायता से कम समय में आसानी से श्रेष्ठतम साहित्य तक पहुँच सकते हैं।

शोध की नवीनता:

इस शोध पत्र की नवीनता इस तथ्य में निहित है कि यह मुसहर समुदाय संबंधित वैश्विक अध्ययनों के विकास को समझने में मदद करता है। इसमें मुसहर समुदाय संबंधित अध्ययनों का ग्रंथमितीय विश्लेषणात्मक अनुसंधान एवं वैज्ञानिक दृश्यीकरण प्रस्तुत किया गया है। मुसहर समुदाय के विविध आयाम वैश्विक ज्ञानानुशासनों के अलग-अलग परिप्रेक्ष्य में कैसे जुड़ता है, और उसका जुड़ाव कितना महत्त्वपूर्ण एवं मजबूत है, को समझने के लिए ग्रंथमितीय विश्लेषण और वैज्ञानिक दृश्यीकरण इस शोध की नवीनता को प्रस्तुत करता है।

शोध का योगदान:

इस शोध अध्ययन का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान यह है कि इस अध्ययन में 'डायमेंशन डेटाबेस' से प्राप्त मुसहर समुदाय संबंधित प्रकाशनों का ग्रंथमितीय विश्लेषण एवं वैज्ञानिक मानचित्रण प्रस्तुत किया गया है। ग्रंथमितीय, गणितीय और सांख्यिकीय तरीकों द्वारा सभी उपलब्ध ग्रन्थों का मात्रात्मक विश्लेषण करने वाला क्रॉस-डिसिप्लिनरी विज्ञान है (मेरिगो एट आल., 2017)। इस ग्रंथमितीय अध्ययन को वीओएस व्युवर सॉफ्टवेयर की सहायता से पूर्ण किया गया है, जिसके विभिन्न विकल्पों का प्रयोग करके नेटवर्क और सघनता दृश्यीकरण प्रस्तुत किया गया है। इस अध्ययन में शीर्ष उत्पादक अनुसंधानकर्त्ता, स्रोत एवं देश जैसे मानदंडों का प्रयोग किया गया है। इसके परिणाम मुसहर समुदाय संबन्धित अध्ययन करने वाले भावी अनुसंधानकर्त्ताओं के लिए महत्त्वपूर्ण होंगे। क्योंकि इस अध्ययन का अवलोकन करके वे जान सकेंगे कि मुसहर समुदाय संबंधित अभी तक किए जा चुके सर्वाधिक अध्ययन मुख्यतः किन-किन देशों में हुये हैं, 10 सर्वाधिक उत्पादक लेखक कौन-कौन हैं, 10 सर्वाधिक उत्पादक पत्रिका कौन-कौन सी हैं। वे सर्वाधिक उत्पादक लेखकों को जानकार राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहयोगात्मक अनुसंधान हेतु साथी अनुसंधानकर्त्ता तक आसानी से पहुँच सकेंगे। शीर्ष पत्रिका की सहायता से सीधे तौर पर सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण साहित्य तक बहुत आसानी से पहुँच सकेंगे। इसके साथ ही यह अध्ययन विभिन्न ज्ञानानुशासनों के विविध आयामों का ग्रंथमितीय विश्लेषण और वैज्ञानिक दृश्यांकन करने हेतु अनुसंधानकर्त्ताओं को अभिप्रेरित भी करेगा।

निष्कर्ष:

इस शोध पत्र में वैश्विक स्तर पर मुसहर समुदाय के क्षेत्र में किए जा चुके अध्ययनों का वीओएस व्युवर सॉफ्टवेयर की सहायता से ग्रंथमितीय विश्लेषण किया गया। ग्रंथमितीय विश्लेषण संबंधित विषय क्षेत्र में संरचना और विकास को खोजने में मदद करता है। ग्रंथमितीय विश्लेषण के लिए वर्ष 2024 (18/09/2024, 21:45 PM) तक लेंस डेटाबेस से प्राप्त कुल 654 मुसहर समुदाय संबंधित प्रकाशनों का प्रयोग किया गया। वर्ष 2022 में सर्वाधिक (78) प्रकाशन हुआ है। मुसहर समुदाय पर अनुसंधान करने वाले कुल 41 देशों में सर्वाधिक उत्पादक तीन देश भारत, नेपाल और संयुक्त राज्य अमेरिका हैं। कुल 13 प्रकाशन और 12 साइटेशंस के साथ सर्वाधिक उत्पादक लेखक इंद्रजीत राय हैं और दूसरे स्थान पर मरियम शर्मा हैं। त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल,

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, भारत और दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत वैश्विक स्तर पर शीर्ष उत्पादक संस्थान हैं। मुसहर समुदाय संबंधी अनुसंधान प्रकाशित करने वाले शीर्ष स्रोत बुलेटिन ऑफ द स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज़, कंटेम्पररी वाइस ऑफ दलित और सोशियोलॉजिकल बुलेटिन हैं। इस शोध के परिणाम मुसहर समुदाय संबंधित नवीन अनुसंधानकर्त्ताओं के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है।

संदर्भः

[1]. Archana & Singh, Pushpendra (2018). Changing Lives of Dalits, the Musahar's Community in Madhepura, Bihar: Socio-economic Observation in Twenty-first Century. Contemporary Voice of Dalit, 10(2), 192–203. https://doi.org/10.1177/0019556118785287

[2]. Asari, H., Ritonga, M., Nursalimah, N., Megawati, B., Ruwaidah, R., & Watrianthos, R. (2024). Mapping the Modernization of Islamic Education: A Bibliometrics Analysis of Research Trends from 1965 to 2022. International Journal of Changes in Education. https://doi.org/10.47852/bonviewIJCE42023100

[3]. Broadus, R. N. (1987). Toward a definition of "bibliometrics". Scientometrics, 12(5), 373–379. https://doi.org/10.1007/BF02016680

[4]. Chand, Dinesh & Banerjee, Swati (2019). Migration and Livings: A Livelihood Strategy for Survival for Musahar Community in Uttar Pradesh. Journal of social work education research and action 5(1), 33-50. https://doi.org/10.18203/2394-6040.ijcmph20205670

[5]. Chandrakasan S, G. & Sumathi R. M. (2023). A Bibliometric Study on Indian Journal of Adult Education During the year 2016-2022. https://doi.org/10.5281/zenodo.7794372

[6]. Dev, Nirmala (2013). Socio-Economic Conditions of Musahar: A Case Study of Rajviraj Municipality. Published online by Dissertation, Central Department of Rural Development, Tribhuvan University Kirtipur, Nepal. https://elibrary.tucl.edu.np/bitstream/123456789/2279/3/10015%20RD%20Nirmala%20Deo%20Final%20Research.pdf

[7]. Glänzel, W., & Schoepflin, U. (1999). A bibliometric study of reference literature in the sciences and social sciences1. Information Processing & Management, 35(1), 31–44. https://doi.org/10.1016/S0306-4573(98)00028-4

[8]. Gautam, Laxmi & Subedi, Jwala (2021). Barriers in the utilization of maternal and child health services among Musahar in Dudhauli Municipality of Sindhuli district, Nepal. International Journal of Community Medicine and Public Health. 8(1), 1-8.

[9]. Geminiani, A., Ercoli, C., Feng, C., & Caton, J. G. (2014). Bibliometrics Study on Authorship Trends in Periodontal Literature From 1995 to 2010. Journal of Periodontology, 85(5), e136–e143. https://doi.org/10.1902/jop.2013.130354

[10]. Giri, Madhu & K.C., Ganga (2022). Politics of Place Making and Positions of the Musahars at Jamdaha-Golbazar. Patan Prospective Journal. 2. 84-96. https://www.researchgate.net/publication/363526501_Politics_of_Place_making_and_Positions_of_the_Musahars_at_Jamdaha-Golbazar

[11]. Giri, B. R. (2012). The Bonded Labour System in Nepal Musahar and Tars Communities' Assessment of the Recent and Kamaiah Labour Contracts. Journal of Alternative Perspectives in the Social Science, 4(2), 518-551.

[12]. Gogoi, N., Salim, A., & Dutta, S. (2023). Relevance of Indian Knowledge System in Social Science: A Bibliometric Analysis. Splint International Journal of Professionals, 10, 375–381. https://doi.org/10.5958/2583-3561.2023.00037.1

[13]. Gupta, P. (2021). Analyzing Women's Exploitation in Agrarian Society: A Case of Musahar Community in Bihar. Research Journal of Humanities and Social Sciences, 12(4), 230-234.

[14]. Haboubi, C., El Hammoudani, Y., Jaradat, N., Jodeh, S., Haboubi, K., Haboubi, E., Dimane, & Dimane, F. (2024). A Bibliometric Analysis of Cannabis-Related Research from. Palestinian Medical and Pharmaceutical Journal, Vol. 9 (2024), 125–136. https://doi.org/10.59049/2790-0231.1132

[15]. Herut, A. H. (2024). Global trends of research on advancing the pedagogical competence of preschool teachers: A bibliometric analysis. Social Sciences & Humanities Open, 10, 100947. https://doi.org/10.1016/j.ssaho.2024.100947

[16]. Jaiswal, R. P. (2023). The plight of Rural Dalit Women in India: A Sociological Analysis. https://www.researchgate.net/publication/228906019_Plight_of_Rural_Dalit_Women_in_India_A_Sociological_Analysis

[17]. Jia, H., Li, H., Rong, Y., Jiang, K., Liang, X., & Li, G. (2024). Knowledge Mapping of Macrophages in Osteoporosis: A Bibliometric Analysis (1999–2023). Orthopaedic Surgery, n/a-n/a. https://doi.org/10.1111/os.14159

[18]. Jha, A. (2021). Democratic Decentralization and Socio-Political Inclusion of Marginalized Communities: A Study of Musahar Community in Madhubani District of Bihar, India. *Contemporary Voice of Dalit*, *0*(0). https://doi.org/10.1177/2455328X211042499

[19]. Karki, B. Socio-Economic Conditions of Musahar Community: A Case Study of Hattimuda VDC Morang District. Dissertation Published, Central Department of Rural Development, Tribhuvan University, Kirtipur, Kathmandu. https://elibrary.tucl.edu.np/handle/123456789/8157

[20]. Kirtania, D. (2023). The Top 100 Most Cited Papers in Bibliometrics: A Bibliometric Analysis. Journal of Data Science, Informetrics, and Citation Studies, 2, 130–132. https://doi.org/10.5530/jcitation.2.2.17

[21]. Khadka, S., Sapkota, S., Adhikari, S. *et al* (2021). Intestinal Parasitoses among Chepang and Musahar Community People of Makwanpur and Nawalparasi Districts of Nepal. *Acta Parasit.* 66, 146–154. https://link.springer.com/article/10.1007/s11686-020-00269-0

[22]. Koseoglu, M. A., Rahimi, R., Okumus, F., & Liu, J. (2016). Bibliometric studies in tourism. Annals of Tourism Research, 61, 180–198. https://doi.org/10.1016/j.annals.2016.10.006

[23]. Kumar, D. (2018). The Musahar Folk Song of South Bihar: An Anthropological Insights. Asian Man (The) - An International Journal. 12 (2), 235-239.

https://www.researchgate.net/publication/328886506_The_Musahar_Folk_Song_of_South_Bihar_An_Anthropological_Insights

[24]. Kumar, Dharmendra (2017). Mapping Marginalization of Cost and Inclusion of Cost: A Study of Manpur Village, Gaya (Bihar). Unpublished M.Phil. Thesis, Centre for the Study of Social Exclusion and Inclusive Policy, University of Hyderabad.

[25]. Kumar, A. (2006). Culture, Development and the Cultural Capital of Farce: The Musahar Community in Bihar. *Economic and Political Weekly*, *41*(40), 4281–4291. http://www.jstor.org/stable/4418787

[26]. Kumar, P. (1999). Dalits and the BSP in Uttar Pradesh: Issues and Challenges. *Economic and Political Weekly*, *34*(14), 822–826. http://www.jstor.org/stable/4407820

[27]. Lyu, P., Liu, X., & Yao, T. (2023). A bibliometric analysis of literature on bibliometrics in recent half-century. Journal of Information Science. https://doi.org/10.1177/01655515231191233

[28]. Ministry of Social Justice and Empowerment, Gov. of India. List of Scheduled Castes. Retrieved from: https://socialjustice.gov.in/common/76750 (28/08/2024)

[29]. Merigó, J. M., & Yang, J.B. (2017). Accounting Research: A Bibliometric Analysis. Australian Accounting Review, 27(1), 71–100. https://doi.org/10.1111/auar.12109

[30]. Mukul. (1999). The Untouchable Present: Everyday Life of Musahars in North Bihar. *Economic and Political Weekly*, *34*(49), 3465–3470. http://www.jstor.org/stable/4408689

[31]. Noorokariyil, Siji. (2020). 'Living With 'Katav': Experiences of the Musahar Community in the Gandak. https://www.researchgate.net/publication/353915011_'Living_With_'Katav'_Experiences_of_the_Musahar_Community_in_the_Gandak

[32]. O'Connor, S. (2024). Over twenty years of pedagogical research from Nurse Education in Practice: A bibliometric analysis from 2001 to 2023. Nurse Education in Practice, 76, 103912. https://doi.org/10.1016/j.nepr.2024.103912

[33]. Patra, S. K., Bhattacharya, P., & Verma, N. (2006, January). Bibliometric Study of Literature on Bibliometrics (Journal Article (Paginated) 1). DESIDOC Bulletin of Information Technology; Defence Scientific Information & Documentation Centre (DESIDOC). http://eprints.rclis.org/23781/

[34]. Paudel, K., Adhikari, D. & Paudel, S. (2023). Reframing Livelihoods Strategies: Musahar /Bote's Changing Livelihoods Contexts and their Responses to Diverse Development Interventions. https://www.researchgate.net/publication/267370210_Reframing_Livelihoods_Strategies_Musahar Bote's_Changing_Livelihoods_Contexts_and_their_Responses_to_Diverse_Development_Interventions

[35]. Pokhrel, B. (2020). Strained Identity: Cultural and Religious Rituals of a Musahar Community. *Social Inquiry: Journal of Social Science Research*, *2*(1), 128–150. https://doi.org/10.3126/sijssr.v2i1.28912

[36]. Poudel, B., & Kattel, S. (2019). Social Changes in Musahar Community: A Case Study of Dhanusa District of Nepal. *Nepal Journal of Multidisciplinary Research*, *2*(4), 9–16. https://doi.org/10.3126/njmr.v2i4.28703

[37]. Prasad, D. and Kumar, A. (2018). Gulamgiri and Cost Today: An Interpretation. International Journal of Research and Analytical Review, 5(3), pp. 129-132.

[38]. Prasad, A. (2007). The Musahars of Bihar: A Dalit Community in the Wars of Change. The Indian Journal of Social Work, 68(1),152–167.

[39]. Radhakrishnan, S. and Kumari, R. Impact of Education on Scheduled Cost Youth in India: A Study of Social Transformation in Bihar and Madhya Pradesh. Institute of Management and Government, Kerala, India. p. 139.

[40]. Rana, M. K. (2017). Occupation and Educational Status of Musahar: A Study of Bardibas Municipality Mahottari, Nepal. published Dissertation (online), Central Department of Rural Development, Tribhuvan University, Krittipur, Kathmandu, Nepal. https://elibrary.tucl.edu.np/handle/123456789/2329

[41]. Rizka, H., Hastina, H., & Pramono, S. (2024). A Bibliometric Analysis of Green Accounting Research. JAS (Jurnal Akuntansi Syariah), 8, 37–53. https://doi.org/10.46367/jas.v8i1.1737

[42]. Sahay, G. R. (2019). Substantially present but invisible, excluded and marginalised: A study of Musahars in Bihar. *Sociological Bulletin*, *68*(1), 25-43. Retrieved from: https://journals.sagepub.com/doi/pdf/10.1177/0038022918819357

[43]. Sakshena, H. S. (1975). Denotified Communities of Uttar Pradesh in Perspective. *Indian Anthropologist*, *5*(1), 1–11. http://www.jstor.org/stable/41919271

[44]. Sapota, M.Sharma, S. R. & Joshi, D. (1989). Gender Dimensions of Land Issues Among the Dalits: A Case of Musahar Community in Nawalparsi District. Consortium for Land Research and Policy Dialogue (COLARP).

[45]. Sharma, J. (2022). A New Ethnographic Study on Musahar Community of Bihar: A Critical Analysis. published dissertation (online), Department of Anthropology, Central University, Orissa. http://hdl.handle.net/10603/378362

[46]. Sharma, J. & Nayak, J. (2018). The Musahar a Socially excluded community of Bihar. https://www.researchgate.net/publication/333652086_The_Musahar_A_Socially_excluded_community_of_Bihar

[47]. Shilpi, Amrita (2021). A Question of Recognition and Redistribution: Understanding Dom and Musahar Castes of Bihar. *Towards Excellence* 13(1). 13-35 https://www.academia.edu/73155131/A_Question_of_Recognition_and_Redistribution_Understanding_Dom_and_Musahar_Castes_of_Bihar

[48]. Singh, D. R. (2019). Knowledge Factors of Health Consequences from Child Marriage: Evidence from Musahar Community of Eastern Nepal.

[49]. Singh, Dharmendra. (2016). Socio-Demographic Condition of One of the Most Marginalised Caste in Northern India. Demography India. 45(1&2). 117-130. https://www.researchgate.net/publication/346438772_Socio-Demographic_Condition_of_One_of_the_Most_Marginalised_Caste_in_Northern_India

[50]. Singh, S. S. (2013). Intervention, Identity and Marginality: An Ethnographic Account of the Musahars. *Economic and Political Weekly*, *48*(20), 52–59. http://www.jstor.org/stable/23527368

[51]. Subba, B. b., Rana, H. b. & Ansari, M. (2007). Knowledge and Practice of Parents on Childhood Immunization of Musahar Community in Morang District, Nepal. http://103.69.126.140:8080/handle/123456789/58

[52]. Thomas, M. J. & Ara, A. (2018) This Socio-Economic Appraisal on Livelihood Struggle of Musahar Community in Allahabad District The Oriental Anthropologist The Oriental Anthropologist by Annual International Journal of the Science of Man 18(1), 121-129. https://journals.sagepub.com/doi/10.1177/0976343020180109

[53]. Thompson, D. F., & Walker, C. K. (2015). A Descriptive and Historical Review of Bibliometrics with Applications to Medical Sciences. Pharmacotherapy: The Journal of Human Pharmacology and Drug Therapy, 35(6), 551–559. https://doi.org/10.1002/phar.1586

[54]. V R, R., R S, P., Selvaraj, R., & A.P., P. (2024). Decadal (2013-2022) Bibliometric Analysis and Visualization of the Journal of Geological Society of India and Insights into Post-Covid Publication Behaviour. 3, 79–92.

[55]. Vaishya, R., Gupta, B. M., Mamdapur, G. M., & Vaish, A. (2024). Indias Publications on Rheumatoid Arthritis: A Bibliometric Analysis of Research Output from 1994 to 2023 A.D. Journal of Nepal Health Research Council, 22. https://doi.org/10.33314/jnhrc.v22i01.5061

[56]. Wang, X., Xu, Z., Su, S.-F., & Zhou, W. (2021). A comprehensive bibliometric analysis of uncertain group decision-making from 1980 to 2019. Information Sciences, 547, 328–353. https://doi.org/10.1016/j.ins.2020.08.036

Cite this Article:

सुमन पाल. (2026). मुसहर समुदाय की वैश्विक अकादमिक विमर्श तक पहुँच: एक ग्रंथमितीय विश्लेषण एवं वैज्ञानिक मानचित्रीयकरण, International Journal of Social Nexus Review. 1(1), 17–33.

Journal URL: https://socialnexusreview.com/

Disclaimer/Publisher's Note*: The views, findings, and conclusions presented in this article are entirely the responsibility of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any inaccuracies, copyright infringements, or any consequences resulting from the use or interpretation of the published content.*